Vatsa Bhakti

🌐 https://vatsabhakti.in

▶️ https://www.youtube.com/@vatsabhakti

रावण द्वारा रचित शिव तांडव स्तोत्र: अर्थ

जटा टवी गलज्जलप्रवाह पावितस्थले गलेऽव लम्ब्यलम्बितां भुजंगतुंग मालिकाम्।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनाद वड्डमर्वयं चकारचण्डताण्डवं तनोतु नः शिव: शिवम् ॥१॥\

उनकी जटाओं से बहती पवित्र जलधारा उनके कंठ को शुद्ध कर रही है,
उनके गले में सर्प हार के समान सुशोभित है,
डमरू से निरंतर “डमट् डमट्” की गूंज निकल रही है,
ऐसे शिव शंकर शुभ तांडव नृत्य कर रहे हैं—वे हम सभी को समृद्धि प्रदान करें।

जटाकटा हसंभ्रम भ्रमन्निलिंपनिर्झरी विलोलवीचिवल्लरी विराजमानमूर्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वल ल्ललाटपट्टपावके किशोरचंद्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम: ॥२॥

मुझे भगवान शिव में गहरी आस्था है,
जिनका मस्तक दिव्य गंगा की प्रवाहित धाराओं से शोभायमान है,
जो उनकी जटाओं की गहराइयों में उमड़ती हुई बहती हैं।
जिनके ललाट पर तेजस्वी अग्नि प्रज्वलित है,
और जो अपने सिर पर अर्धचंद्र को अलंकार रूप में धारण किए हुए हैं।

धराधरेंद्रनंदिनी विलासबन्धुबन्धुर स्फुरद्दिगंतसंतति प्रमोद मानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणी निरुद्धदुर्धरापदि क्वचिद्विगम्बरे मनोविनोदमेतु वस्तुनि ॥३॥

मेरा हृदय भगवान शिव में ही आनंद प्राप्त करे,
जिनके चित्त में समस्त ब्रह्मांड के जीव समाहित हैं,
जिनकी अर्धांगिनी पर्वतराज की पुत्री माता पार्वती हैं,
जो अपनी करुणामयी दृष्टि से व्यापक आपदाओं को शांत कर देते हैं,
और जो समस्त दिव्य लोकों को मानो वस्त्र की भाँति धारण किए हुए हैं।

जटाभुजंगपिंगल स्फुरत्फणामणिप्रभा कदंबकुंकुमद्रव प्रलिप्तदिग्व धूमुखे।
मदांधसिंधु रस्फुरत्वगुत्तरीयमेदुरे मनोविनोदद्भुतं बिंभर्तुभूत भर्तरि ॥४॥

मुझे भगवान शिव में अद्वितीय आनंद प्राप्त हो, जो समस्त प्राणियों के रक्षक हैं।
उनके गले में लिपटा सर्प, जिसका लाल-भूरा फन और चमकती मणि है,
अपनी आभा से दिशाओं की देवियों के सुंदर मुखों पर विविध रंग बिखेरता है।
वे विशाल, मदमस्त हाथी की खाल से बने तेजस्वी वस्त्र को धारण किए हुए हैं।

सहस्रलोचन प्रभृत्यशेषलेखशेखर प्रसूनधूलिधोरणी विधूसरां घ्रिपीठभूः।
भुजंगराजमालया निबद्धजाटजूटकः श्रियैचिरायजायतां चकोरबंधुशेखरः ॥५॥

भगवान शिव हम सभी को समृद्धि प्रदान करें,
जिनके सिर पर चंद्रमा मुकुट के समान सुशोभित है,
जिनकी जटाएँ लाल सर्पों के हार से सुसज्जित हैं,
जिनके चरणों का आसन उन पुष्पों की धूल से गहरा हो गया है,
जो इंद्र, विष्णु और अन्य देवताओं के शीश से झरती है।

ललाटचत्वरज्वल द्धनंजयस्फुलिंगभा निपीतपंच सायकंनम न्निलिंपनायकम्।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं महाकपालिसंपदे शिरोजटालमस्तुनः ॥६॥

शिव की जटाओं के गुच्छों से हमें सिद्धि और समृद्धि प्राप्त हो,
जिन्होंने अपने ललाट की अग्नि की ज्वाला से कामदेव का दहन किया,
जो समस्त देवताओं के द्वारा पूजनीय और आदरणीय हैं,
और जो अर्धचंद्र से सुशोभित अपने मस्तक को धारण किए हुए हैं।

करालभालपट्टिका धगद्धगद्धगज्ज्वल द्धनंजया धरीकृतप्रचंड पंचसायके।
धराधरेंद्रनंदिनी कुचाग्रचित्रपत्र कप्रकल्पनैकशिल्पिनी त्रिलोचनेरतिर्मम ॥७॥

मेरी भक्ति भगवान शिव में रची-बसी रहे, जो त्रिनेत्रधारी हैं,
जिन्होंने प्रचंड कामदेव को अपनी अग्नि में भस्म कर दिया,
जिनके उग्र मस्तक से "डगद्-डगद्" की गूंजती ध्वनि के साथ ज्वाला प्रज्वलित होती है,
और जो पर्वतराज की पुत्री पार्वती के अंगों पर कलात्मक अलंकरण करने में अद्वितीय हैं।

नवीनमेघमंडली निरुद्धदुर्धरस्फुर त्कुहुनिशीथनीतमः प्रबद्धबद्धकन्धरः।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिंधुरः कलानिधानबंधुरः श्रियं जगंद्धुरंधरः ॥८॥

भगवान शिव हम सभी को समृद्धि प्रदान करें,
जो संपूर्ण जगत का भार धारण करने वाले हैं,
जिनकी शोभा उनके मस्तक पर सुशोभित चंद्रमा से बढ़ती है,
जिनकी जटाओं में दिव्य गंगा प्रवाहित होती है,
और जिनका कंठ अमावस्या की अर्धरात्रि में घिरे घने बादलों की भाँति गहरा श्याम है।

प्रफुल्लनीलपंकज प्रपंचकालिमप्रभा विडंबि कंठकंध रारुचि प्रबंधकंधरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिंद भवच्छिदं मखच्छिदं गजच्छिदांधकच्छिदं तमंतकच्छिदं भजे ॥९॥

मैं भगवान शिव की आराधना करता हूँ,
जिनका कंठ मंदिरों की ज्योति और पूर्ण खिले नीले कमलों की शोभा से अलंकृत प्रतीत होता है,
जो ब्रह्मांड की गहन कालिमा के समान गहरा और रहस्यमय है।

वे कामदेव के संहारक, त्रिपुर के विनाशक हैं,
जिन्होंने संसार के बंधनों को तोड़ा, बलि का अंत किया,
अंधक दैत्य का वध किया, गजासुर का संहार किया,
और जिन्होंने मृत्यु के देवता यम को भी परास्त किया।

अखर्वसर्वमंगला कलाकदम्बमंजरी रसप्रवाह माधुरी विजृंभणा मधुव्रतम्।
स्मरांतकं पुरातकं भावंतकं मखांतकं गजांतकांधकांतकं तमंतकांतकं भजे ॥१०॥

मैं भगवान शिव की आराधना करता हूँ,
जिनके चारों ओर मधुमक्खियाँ मँडराती रहती हैं,
शुभ कदंब पुष्पों के गुच्छों से फैलती मधुर मधु-गंध के आकर्षण से।
वे कामदेव के संहारक, त्रिपुर के विनाशक हैं,
जिन्होंने संसारिक बंधनों को समाप्त किया और बलि का अंत किया,
अंधक दैत्य का वध किया, गजासुर का संहार किया,
और जिन्होंने मृत्यु के देवता यम को भी परास्त किया।

जयत्वदभ्रविभ्रम भ्रमद्भुजंगमस्फुरद्ध गद्धगद्विनिर्गमत्कराल भाल हव्यवाट्।
धिमिद्धिमिद्धि मिध्वनन्मृदंग तुंगमंगलध्वनिक्रमप्रवर्तित: प्रचण्ड ताण्डवः शिवः ॥११॥

शिव, जिनका तांडव नृत्य नगाड़ों की “ढिमिड-ढिमिड” गूँजती लय के साथ समन्वित है,
जिनके विशाल मस्तक पर प्रज्वलित अग्नि, सर्प की श्वास से और प्रबल होकर
गरिमामय आकाश में चक्राकार फैलती हुई नृत्य करती प्रतीत होती है।

दृषद्विचित्रतल्पयो र्भुजंगमौक्तिकमस्र जोर्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारविंदचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समं प्रवर्तयन्मनः कदा सदाशिवं भजे ॥१२॥

मैं उस शाश्वत, मंगलमय भगवान सदाशिव की आराधना कब कर पाऊँगा,
जो सम्राटों और साधारण जनों में समान दृष्टि रखते हैं,
घास के तिनके और कमल में, मित्र और शत्रु में कोई भेद नहीं करते,
जिनके लिए अनमोल रत्न और धूल समान हैं,
सर्प और हार एक जैसे हैं,
और जो समस्त जगत के विविध रूपों में एकरस भाव से स्थित हैं।

कदा निलिंपनिर्झरी निकुंजकोटरे वसन् विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमंजलिं वहन्।
विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः शिवेति मंत्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥१३॥

मैं कब सच्चे आनंद को प्राप्त कर पाऊँगा—
जब अलौकिक गंगा के तट पर किसी गुफा में निवास करूँगा,
हाथ जोड़कर सदैव सिर पर धारण किए हुए,
अपने अशुद्ध विचारों को धोकर शुद्ध करता हुआ,
और महान मस्तक तथा चेतन नेत्रों वाले भगवान शिव के मंत्रों का जप करते हुए,
पूरी श्रद्धा से स्वयं को उन्हें समर्पित कर दूँगा?

इमं हि नित्यमेव मुक्तमुक्तमोत्तम स्तवं पठन्स्मरन् ब्रुवन्नरो विशुद्धमेति संततम्।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथागतिं विमोहनं हि देहिनां सुशंकरस्य चिंतनम् ॥१६॥

जो इस स्तोत्र को पढ़ता, स्मरण करता और गाता है,
वह सदा के लिए पवित्र हो जाता है और महान गुरु शिव की भक्ति को प्राप्त करता है।
इस भक्ति को पाने का कोई अन्य मार्ग या उपाय नहीं है,
क्योंकि केवल शिव का चिंतन ही समस्त भ्रम और मोह को दूर कर देता है।

भगवान शिव की महिमा, शिव तांडव स्तोत्र **shiv tandav stotram**, और शिव भक्ति का महत्व हिंदू धर्म में अत्यंत गहरा और पवित्र माना जाता है। जो व्यक्ति शिव मंत्र, शिव स्तोत्र और विशेष रूप से शिव तांडव स्तोत्र का नियमित पाठ करता है, उसे मानसिक शांति, आध्यात्मिक उन्नति और जीवन में सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है। भगवान शिव को त्रिनेत्रधारी, नीलकंठ और महादेव के रूप में जाना जाता है, जो अपने भक्तों के सभी दुखों को दूर करके उन्हें सुख, समृद्धि और सफलता प्रदान करते हैं। शिव भक्ति का मार्ग सरल होते हुए भी अत्यंत शक्तिशाली है, क्योंकि केवल शिव का स्मरण ही नकारात्मकता और भ्रम को समाप्त कर देता है, जिससे व्यक्ति को मोक्ष और आत्मिक शांति की प्राप्ति होती है।